International Journal of Applied Research 2017; 3(12): 305-307

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(12): 305-307
www.allresearchjournal.com
Received: 17-10-2017
Accepted: 18-11-2017

डॉ. अनुष्का तिवारी
पी–एच.डी. (हिन्दी)
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. अनुष्का तिवारी
पी–एच.डी. (हिन्दी)
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

तुलसी काव्य में लोकमत से संबंधित मूल्य

डॉ. अनुष्का तिवारी

सारांश
जब कवि, चिन्तक, समाज सुधारक उच्च वैचारिक स्थिति में प्रवेश करता है, तब वह अपनी परिपक्व मेधा से, जीवन के गहन अनुभव के साथ ही अनुभूत सत्य के गहन अनुभव से जो कुछ कहता है। वह ''कागद की लेखी'' के साथ–साथ ''आखिन देखी'' अधिक होता है।
रामचरित मानस के प्रणेता गोस्वामी तुलसी दास जी ने अनेक मतों का उल्लेख मानस के अतिरिक्त विनय पत्रिका में किया है, किन्तु वे स्वयं किसी मतवाद के चक्कर में नहीं फसतें है, बल्कि विभिन्न मतो के अच्छे तथयों को ग्रहण करके एक विशिष्ट रसायन तैयार करतें हैं, जिसे गोस्वामी जी का विशिष्ट मत कहा जा सकता है, जब तुलसी दास जी जैसे महान कवि लेखनी चला रहे थे। तब ढेर सारे मत–मतान्तर उपस्थित थे।

Keywords: लोकमत, चिन्तक, समाज सुधारक

प्रस्तावना
शंकराचार्य का वेदान्तमत अपनी धाक जमा चुका था। शैव मत भी अपने प्रबल स्वरूप में उदित हो चुका था। वैष्णव मत की अनेक शाखाएँ – उपशाखाएँ बन चुकी थी। वर्ण और जाति के आधार पर ब्राम्हणवाद की कमान सम्हाले ब्राम्हण ग्रंथ एक ओर खड़े थे तो दबे, कुचले, अपमानित तिरष्कृत सन्तों के सम्प्रदाय कुछ अलग ही राग अलाप रहे थे –

''जाति पाति पूछै नहि कोई, हरि को भजै सो हरि का होई''

अब यदि शास्त्रीय मतो की बात करें तो परमेश्वरवाद, निर्गुणमतवाद, सगुणमतवाद, वैष्णवमत, शैवमत अपनी–अपनी पराकाष्ठा पर थे, कोई किसी से जुड़ने को तैयार नही था। ऐसे संघर्ष शील युग में गोस्वामी तुलसीदास रामचरित मानस की रचना करते है। वे अद्वैतवाद, द्वैतवाद तथा विशिष्टाद्वैत मतवाद के भ्रमात्मक जाल में न उलझकर सीधी – सीधी सरल भक्ति पद्धति का अन्वेषण करते हैं, जिस पर, याज्ञक्तक्य और भारद्वाज जैसे ऋषि भी चल सकते है। अगस्त्य, सरभंग और सुतीक्ष्ण जैसे तपस्वी भी चल सकते है, साथ ही उसी भाक्ति पथ पर निपट निरक्षर केवट तथा तिस्कृत अधूत बाला शबरी भी चल सकती है। यदि तुलसी के भक्ति मत में वशिष्ट समा सकते है, पुत्र मोह में फशे दशरथ जैसे चक्रवर्ती नरेश समा सकते है, तो दूसरी ओर उसी भक्ति पथ पर लांछित अपमानित अहल्या भी आ सकती है। रामचरण में उसे भी स्थान मिल सकता है।
गणिका, गीध अघामिल को भी तुलसी के भक्ति मत में कहीं कोई रोक – टोक, परहेज या घृणात्मक भाव नहीं है। अतः तुलसी के काव्य में मतवादी मुल्यों की विवेचना में लोकमत से संबंधित मूल्य पर विचार प्रस्तुत है।
गोस्वामी तुलसी दास अवधी और ब्रज भाषा के कवि है, उनकी लेखनी से अध्यात्म, भक्ति और उच्च आदर्श भी यदि प्रस्तुत हुए है, तो लोकभाषा में ही, लोक जीवन के बीच में ही, लोकजीवन के बीच में ही। इसलिए मानस में शास्त्रीय मत के साथ – साथ लोकमत का महत्व बना रहता है। विषय से विषम परिस्थिति में भी साधुमत और वेदमत के साथ – साथ लोकमत को भी महत्व दिया जाता है। लोक मानव जीवन के उन मान्यताओं का समुच्चय है, जिस समाज में वह जन्म लेता है, विकासित होता है और जिस लोक समाज के संस्कारों को लेकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है।
गोस्वामी तुलसीदास ने भले ही रामचरित मानस की रचना करते समय शास्त्रों, वेदों, पुराणों का आश्रय निया हो, ''नाना पुराण निगमागमं सवतं यद'' द्वारा इस तथ्य को स्वीकर किया हो, किन्तु इसके आगे की सच्चाई यह है, कि वे लोकमत में प्रचालित मान्यताओं, आस्थाओं, परंपराओं को जीवन मूल्य के रूप में ग्रहण करते है। कभी वे इस बात का खुलासा ''क्वचि दन्यतोडिप'' कहकर करते है, तो कभी चित्रकूट में ''साधुमत'', ''वेदमत'', ''नृप नए निगम विचारि'' द्वारा लोकमत को भी साथ में जोड़ते है।

इसी वेचारिक पूष्ठभूमि पर तुलसी साहित्य में विद्यमान लोकमत परक मूल्यों का अनुशीलन अन्वेषण एवं अध्ययन किया जाना शोध पत्र के अनुरूप होगा। अयोध्या के श्रेष्ठ राजघरानें में जब चार – चार पुत्रों का जन्म होता है, तब सारे जन्म संस्कार लोक प्रचलित प्रथा और परंपरा के अनुसार सम्पन्न किए जाते है। ऐसा लगता है, कि अयोध्या का राजपरिवार लोक जीवन में ही जी रही है। इसी प्रकार जब चारो – चार पुत्रों का जन्म होता है। तब सारे जन्म संस्कार लोक प्रचलित प्रथा और परंपरा के अनुसार सम्पन्न किये जाते है। ऐसा लगता है, कि अयोध्या का राजपरिवार लोक जीवन में ही जी रहा है। इसी प्रकार जब चारों राजकुमारों के विवाहोपरांत चार बधुएँ एक साथ अयोध्या में प्रवेश करती है, तब का लोकमत बहुत ही ग्राम्य परंपरा को स्पर्श करता है। यहॉ ''वर दुलही कोहबर में लाए जाते है।'' अमोद–प्रमोद का वातावरण निर्मित होता है। हॅसी–मजाक परिहास का स्वस्थ लोक जीवन में देखने को मिलता है।

निगम नीति कुलरीति करि, अर्ध्य पावड़े देत।[1]
बधुन्ह सहि सुत परछि सब, चली लवाई निकेत।।

यहॉ पर लोकरीति और लोकमत प्रकट हुए है –

लोकरीति जननी करकि , वर दुल्हिन सकुचाहि।[2]
मोद, विनोद, विलोकि बड़, राम मनहि मुस्काहि।।

ऐसे ही दृश्य जनकपुर में भी देखने को मिलतें है।[3] राम और जानकी जब ससुराल की कोहवर में अपनी सरजहों के बीच में होते है, तब लोकमत के मूल्य अधिक प्रभावी रूप में प्रकट होते है। यहाँ हास–परिहास का दौर चलता है। कभी राम की बहन को लक्ष्य करके अयोध्या परिवार को गाली दी जाती है। ''राम की बहन तो श्रृंगी ऋषि के साथ चली गई कोई राजकुमार मिला ही नहीं'' ऐसा उपहास किया जाता है और राम की ओर से भी उपहास किया जाता है, कि जनकपुर में तो बेटियॉ धरती से फूट कर निकलती हैं ये सब लोकमत है, जो परंपराओं में समा गए है और आज तक हजारों वर्ष पश्चात भी लोकगीतों में विद्यमान है। लोकमत परक मूल्य हम उनके मुहावरों में देखते है, जो मानस में प्रयुक्त हुए है। वे मत लोक में इतने प्रबल है, कि लगता है शास्त्र मत बल गए है। नित्य प्रति के जीवन में जिन मुहावरों को तुलसी काव्य से लेकर बोल दिया जाता है। वे सब लोकमत से ही आए है।

जैसे –

''का बरषा जब कृषि सुखाने''
''अर्ध्य तजहि बुध सरवस जाता''
''हानि लाभ जीवन मरण जस–अपजस विधि होंथ''
''समरथ को नही दोष गुसाई''

ऐसे कथन लोकमत में घर कर गए है, फलस्वरूप मानस में लोकमत के मूल्य बहुतायत से मिल जाते है। लोकमत घटनाओं में भी परिलक्षित होता है। कैकेयी और मन्थरा की कुमंत्रणाओं से जो कुछ घटित हुआ है, उस पर लोकमत मौन नही रहता –

''छाई भवन पर पावक धरयों, ऐहि पापिन सूझि का परयौ''

यानि लोकमत कैकेयी को कोसता है, उसके पक्ष में नहीं खड़ा होता। अयोध्या में ही नहीं अयोध्या से बहुत दूर वन में ग्रामीण नर–नारियॉ अपना लोकमत देते हैं –

''जे पठए वन बालक ऐसे कहहुँ सखी मातु पितु कैसे''
तथा
''रानी राय कीन्हि भल नाही''

इन कथनों में सामान्य से सामान्य जनमानष का लोकमत प्रकट हो रहा है। जनकपुर में राम लक्ष्मण के सौन्दर्य को देखकर युवतियॉ और नारियॉ जो परस्पर चर्चा करती है।
''आपु प्रकट भए विधि ना बनाए'' अर्थात् राम अपने आप पैदा हो गए है, ब्रह्मा ने इन्हें नहीं रचा है। लोकमत धनुष ना टूटने की बेबसी में जनक को ही भला बुरा कहने में नहीं चूकता। सीता का विवाह साम के साथ बिना सोचे समझे कर देना चाहिए, किन्तु जनक है, जो अपने प्रण में पड़े है। यहॉ लोकमत प्रबल हो रहा है।
इस प्रकार रामचरित मानस में लोकमत अपने ढंग से प्रयुक्त हुआ। मन्थरा के प्रति लोकमत इतना रूष्ट होता है, कि आज भी मंथरा घर फोड़ने के नाम से प्रचलन में है। स्वयं मुहावरा बन गयी है। इसी प्रकार मानस के पात्र नारद जी आज तिकड़म तोड़–फोड़ के पर्याय बन गए है। यह लोकमत की ही अभिब्यक्ति है। रामकथा लोमत तक इतनी सशक्तता से पहुचती है, कि अनेक मुहावरे गढ़ लिए गए है।
जैसे –
घर का भेदिया लंका ढाये'' यह मुहावरे विभीषण के लिए प्रयुक्त हो रहा है। यानि लोकमत में विभीषण को सम्मान प्राप्त नहीं है वह गिरी निगाहों से देखा जाता है। कभी–कभी यह भी कहते सुना जाता है, कि राजा कोई हो रानी मन्दोदरी ही रहेगी। यहॉ अनार्य परंपरा के प्रति लोकमत का व्यंग्य है और तो ओर आदर्श राज्य के लिए आज व्यंग्य परक मुहावरा बन गया है, ''एकदम रामराज्य है''[4] अर्थात् मनमानी है, स्वच्छंदता है।
तात्पर्य यह है, कि लोकमत रामराज्य की उदारता को अच्छा संस्कार के स्व में न ग्रहण करके ''विधि विधान रहित'' स्वच्छंदता के स्व में ले रहा है।
इसी प्रकार ''दैव–दैव आलसी पुकारा'' लोकमत में घर कर चुका है। बैर प्रतिशोध की दशा में '' जियत न सुरसरि अतरन देहूँ'' का प्रयोग करते हुए लोगो को सुना जाता है। आज के राजनैतिक भ्रष्टाचार में दबा–कुचला तबका बड़े ही ठस्के से बोल जाता है।

''को नृप होई हमें का हानी।[5]
चेरी छाड़ि न हो वे रानी ।।''

लोकमत मानस में जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय के रूप में भी कही ना कहीं देखने को मिल जाता है। उसके तुलसी दास कायल दिखते है। जब वे ''शुद्ध द्विजन्ह उपदेसन ग्याना'' अथवा ''पूजिए विप्र वेद गुन हीना'' की बात करते है, तो लगता है, कि उनके मानस पटल पर लोक परंपरा इतनी हावी है, कि वे निरक्षर वेद, गुनहीन, विप्र को भी केवल जन्म के आधार पर पुजने की सलाह देते है।
आज के वर्तमान का लोकमत ऐसे ही कथनों को विरोध कर रहा है। एक बहुत बड़ा प्रतिक्रिया वादियों का वर्ग मानस में निहित ऐसे कथनों के विरोध में खड़ा हो गया है। लेकिन तुलसी दास जहॉ जो कुछ करते है, वह लोकमत होता है। उनका अपना मत नहीं। उनके अपने मत में तो कहीं कोई भेदभाव है ही नहीं क्योंकि उनके नायक ''मानिए एक भगत कर नाता'' के समर्थक है। इस भक्ति के नाते से शबरी भी उन्हे प्रिय है, केवट भी प्रिय है, भरद्वाज भी प्रिय है, जटायु भी प्रिय है और यदि भक्ति नही है यानि हृदय में दया, मानवता, परोपकार, परदुखकातरता जैसे मानवीय गुण नहीं है। वह भक्ति विहीन है, तो ब्रह्मा ही क्यों न हो वह राम को प्रिय नहीं है।

वे कहतें हैं –

''भगति बिना विरंचि किमि होई''

रामचरित मानस में तुलसी दास वर्णाश्रम व्यवस्था को लेकर चलते है। यह व्यवस्था कुछ हद तक शास्त्रीय है। इसके पश्चात् लोकमत का अंग बन जाती है और इसी व्यवस्था में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र को अपनी–अपनी मर्यादा में रहने, आचरण में रहने, जीवन निर्वाह करने की रामराज्य में व्यवस्था प्राप्त है। यानि वर्ण व्यवस्था को तोड़कर किसी नई सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने के पक्ष में तुलसी दास नहीं है। यहॉ भी उन पर वर्णाश्रमी है, किन्तु सन्त जीवन में वर्णाश्रम से मुक्त है।[6] अतः पूरे रामचरित मानस में शास्त्रीय सिद्धान्तों को प्रतिपादन के समानान्तर लोकमत का भी निर्वाहन होता रहा है।

राम का राज्याभिषेक पंचमत पर निर्भर है। यह लोकमत ही है। भरत तो लोकमत के प्रति बहुत सावधान है, उन्हे भली भांति ज्ञान है, कैकेयी के कर्तव्य पर लोकमत उनके विपरीत हो चुका है। लोकमत में कैकेयी के प्रति कोई आस्था नहीं है। अतः वे प्रजा से ही प्रश्न करते है।

''प्रजा पॉच कत करहुँ बड़ाई'' तात्पर्य यह है, कि पंच परमेश्वर रूपी प्रजा कुमति पूर्ण कैकेयी से उत्पन्न उसकी कुमंत्रणा के मूल कारण भरत की क्यों प्रशंसा करते है। इसका कालान्तर में यह भी प्रभाव हो सकता है, कि जो आज प्रशंसक है कल निंदक भी हो सकते है। चौदह वर्षों के पश्चात् तो भरत का कोई अस्तित्व ही न रह जाएगा, यदि वह कैकेयी के मार्ग पर चला। लोकमत के प्रति भरत की दृष्टि बहुत ही दूरगामी है। वे लोकापवाद के इस झमेले में रंचमात्र भी पड़ना नहीं चाहते है।

निष्कर्ष

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने चरित्र प्रधान काव्य की रचना करते समय रामकथा को मूर्त रूप प्रदान करते समय कोरे वेद मत या ज्ञानवाद की ऊॅची कल्पनाएॅ नही की है, बल्कि उन्होने लोक जीवन को लोकभाषा में, लोकशैली में वेदमत या ज्ञानवाद की ऊॅची–ऊॅची कल्पनाएॅ नहीं की है, बल्कि उन्होने लोक जीवन को लोकभाषा में, लोकशैली में वेदमत का पुट देकर प्रस्तुत किया है। अतः कहीं भी नीरसता या कालबाह्यता नहीं आने पाई। जीवन का व्यावहारिक पक्ष तुलसी साहित्य में इसलिए खिल उठा है, क्योंकि उन्होने लोकमत को उच्च मूल्य प्रदान किया।

सन्दर्भ

1. गोस्वामी तुलसीदास – रामचिरत मानस
2. गोस्वामी तुलसीदास – विनय पत्रिका
3. डॉ. कबीश्वर ठाकुर – रामचरित मानस मूल्यांकन एवं युद्ध पद्धति
4. पं. रामकिंकर उपाध्याय – मानस चिन्तन भाग 1, 2, 3,
5. गोस्वामी तुलसीदास – कवितावली
6. जयराम दास दीन – मानस की चरित्र यात्रा : आज और कल के सन्दर्भ में